REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

मध्यप्रदेश में सोयाबीन उपज का वर्तमान परिदृश्य एवं संभावनाएं

श्रीमती श्रुति सोनी[1] , डॉ. श्रीमती संतोष श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थी, बरकतउल्ला विवि, भोपाल.
[2]वाणिज्य विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश), भारत.

शोध सारांश.

हमारा देश कृषि प्रधान देश की श्रेणी में आता है। भारत का दिल कहा जाने वाला मध्यप्रदेश संपूर्ण भारत के कृषि उत्पादन में मध्यप्रदेश राज्य मक्का, सोयाबीन, चना, उड़द के उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर एवं मूंग, मसूर, अलसी, तिल, छोटा बाजरा के उत्पादन में द्वितीय स्थान पर तथा गेहूं, जौ, रमतिल के उत्पादन में देश में तृतीय स्थान पर है वहीं कुल दलहन, कुल तिलहन में प्रथम स्थान पर जबकि कुल खाद्यान में द्वितीय स्थान पर है। भारत में सोयाबीन का आगमन 70 के दशक में हुआ। वर्ष 2022–23 में महाराष्ट्र 5.47 मिलियन टन उत्पादन के साथ देश में पहले स्थान पर था। उसका देश में कुल सोयाबीन उत्पादन में 42.12 प्रतिशत का योगदान था। जबकि मध्यप्रदेश 5.39 मिलियन टन के साथ दूसरे नंबर पर रहा था। देश में कुल सोया उत्पादन में प्रदेश का योगदान 41.50 प्रतिशत था। सोयाबीन उत्पादन की अधिकता के चलते प्रदेश को सोया स्टेट का दर्जा मिला हुआ है, लेकिन शासन की नीति के चलते ये दर्जा बचाए रखना चुनौतीपूर्ण रहा है। आज अधिक प्रोटीन होने से सोयाबीन के सेवन ने कुपोषण की समस्या को दूर किया है। मूंगफली के सीमित उत्पादन ने सोयाबीन का तेल आमजन ने अपना लिया। लेकिन उसके बावजूद सोयाबीन का उत्पादन लगातार कम होता जा रहा है।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश के मालवा में इसकी फसल लेने की परम्परा शुरू हुई। सोयाबीन ने मालवा के किसानों की विपन्नता को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। तब 30 हजार हेक्टेयर एरिया में सोयाबीन की खेती होती थी। कुछ समय बाद जबलपुर में सोयाबीन की किस्मों पर रिसर्च शुरू हुई। एमपी में किसान और बाजार को जोड़ने में तिलहन संघ ने सबसे ज्यादा अहम भूमिका निभाई। सोयाबीन को लेकर किसानों का रुझान देखते हुए इंदौर के आसपास इंडस्ट्री शुरू होने लगी, मगर प्रोडक्शन इंडस्ट्री की डिमांड से बेहद कम हो रहा था। ऐसे में इंडस्ट्रीज ने भी सोयाबीन का प्रचार करना शुरू कर दिया था। इसका नतीजा ये रहा कि 90 के दशक में 100 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन की खेती होने लगी। एमपी ने देश के सामने सबसे पहले सक्सेस मॉडल पेश किया। इसके बाद दूसरे राज्यों ने भी अपनाया। जिस जमीन पर सोयाबीन की फसल लगाई जाती थी, अब उस पर धान की फसल लहलहा रही है। ऐसा इसलिए क्योंकि शासन की ओर से सोयाबीन पर मिलने वाला न्यूनतम समर्थन मूल्य 2024 में 4892 रुपए प्रति क्विंटल तय किया गया है, लेकिन सरकार अपने स्तर पर सोयाबीन की खरीदी नहीं कर पा रही है। जिसके चलते सोयाबीन की फसल लेने वाले किसानों को 12 साल पुराने 3800 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से अब भी मजबूरी में बेचना पड़ रहा है।

समस्याएं

- **आठ साल से सोयाबीन के मूल्य में पर स्थिरताः–** सोयाबीन की कीमत 8 साल से 3–4 हजार रुपए के बीच ही है। वहीं सोयाबीन का न्यूनतम समर्थन मूल्य तो तय है, लेकिन शासन इसकी खरीदारी नहीं करता है। जिस कारण किसान बिचौलियों के जाल में फंस रहे हैं। सोयाबीन का उत्पादन प्रति एकड़ 5–6 क्विटंल होता है, जिसमें 70 फीसदी तो लागत ही लग जाती है। सरकार ने सोयाबीन का समर्थन मूल्य 4850 रुपए प्रति क्विंटल तय किया है। मप्र की मंडियों में सोयाबीन 3500 रुपए प्रति क्विंटल से लेकर 4 हजार रुपए प्रति क्विंटल के बीच ही खरीदा जा रहा है, जबकि किसान को लागत 15 से 20 हजार रुपए प्रति एकड़ सोयाबीन पर आ रही है। कई साल से सोयाबीन के दाम नहीं बढ़ाए गए हैं। जिस कारण से किसान धान उत्पादन की ओर अधिक आकर्षक हो रहे हैं। सोयाबीन पकने के समय यदि बारिश हो जाए तो उसका बीज खराब हो जाता है और किसानों को नुकसान होता है।
- **उचित समर्थन मूल्य न मिलने से सोयाबीन का विकल्प बन रहा धान :–** सोयाबीन के घटते रकबे को देखते हुए हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने सोयाबीन की फसल के समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी करने की घोषणा की है। लेकिन सरकार का यह निर्णय बहुत देरी से आया है। जब सरकार सोयाबीन के दाम कुछ सालों के लिए स्थिर हो गए थे, तभी यह कदम उसी समय उठाना चाहिए था। परिणामस्वरूप किसान वर्तमान में धान की फसल बोने लगे हैं। इससे जहां किसानों की जहां धान की खेती से आय बढ़ी है तो वहीं, भूमिगत जलस्तर में गिरावट आती जा रही है। धान के लिए पानी की ज्यादा आवश्यकता होती है। जिस कारण किसान भूमिगत जल का उपयोग करते हैं, लेकिन इसके कारण भूमिगत जल में कमी आने लगती है। वहीं, धान की फसल में किसी अन्य फसल की तुलना में अधिक कीटनाशक का प्रयोग किया जाता है, जिसके चलते भूमि की उर्वरक क्षमता कम हो जाती है। धान के बाद लगने वाले दूसरी फसल के उत्पादन पर असर पड़ता है।

सोयाबीन की आयात–निर्यात की नीतिः–

भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर के वैज्ञानिकों के अनुसार सोयाबीन एक इंटरनेशनल क्रॉप है। इसमें हमारी हिस्सेदारी मात्र 3 प्रतिशत है। अमेरिका, अर्जेंटीना में प्रोडक्शन हमसे 6 गुना ज्यादा है। सोयाबीन का यूरोपियन और गल्फ कंट्री में बहुत ज्यादा एक्सपोर्ट होता है। देश में पैदा हुई सोयाबीन की 90 प्रतिशत डिओसी (डि ऑयल केक) जो इसका बाय प्रोडक्ट है वो एक्सपोर्ट होती थी और 10 फीसदी सोयाबीन बीज के लिए रखी जाती है। सोयाबीन के दाम इंटरनेशल मार्केट पर डिपेंड करते हैं, इसका डोमेस्टिक कंजंप्शन बेहद कम है। पिछले सालों में इसका यूज बढ़ा है, मगर इतना नहीं कि किसान मार्केट प्राइस को कंट्रोल कर सके। देश में सोयाबीन ऑयल का प्रोडक्शन 17–18 पर्सेंट है। अब सोयाबीन ऑयल की बजाय पाम ऑयल का ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है। पहले पाम ऑयल पर इम्पोर्ट ड्यूटी 35 फीसदी थी जो अब 5 फीसदी है। सरकार को पाम ऑयल पर लगने वाली इम्पोर्ट ड्यूटी को बढ़ाना चाहिए। सरकार जिस तरह से इम्पोर्ट ड्यूटी घटा रही है उससे ऐसा लगता है कि वह अमेरिका, अर्जेंटीना, मलेशिया, इंडोनेशिया, ब्राजील के किसानों को प्रमोट कर रही है और देश के किसान को नजर अंदाज कर रही है। किसानों को सोयाबीन के सही दाम नहीं मिल पा रहे हैं, इसके पीछे ये भी एक बड़ी वजह है।

सुझाव

1. **एमएसपी मूल्य में वृद्धि** :– सोयाबीन फसल पर हर किसान को प्रति क्विंटल उत्पादन पर 4 से 6 हजार रुपए का खर्च करना पड़ते हैं, जो अभी बाजार रेट है वह लागत के बराबर ही है। ऐसे में किसानों को सोयाबीन से कोई फायदा नहीं है। यदि सरकार एमएसपी 6 हजार रुपए करती है तो मार्केट में कॉम्पिटिशन बढ़ेगा। मंडी व्यापारियों को भी दाम बढ़ाने पड़ेंगे।
2. **बाजार की उपलब्धता होना** :– सरकार ने सोयाबीन का समर्थन मूल्य तो तय कर दिया, लेकिन किसानों को फसल बेचने के लिए बाजार नहीं दिया। नतीजा ये हुआ कि खुले बाजार में बिचौलियों की मोनोपॉली हो गई। यानी बिचौलियों की खूब कमाई होने लगी और किसान को फसल का लागत मूल्य तक नहीं मिल पा

रहा है। अगर किसानों को उपर्युक्त बाजार उपलब्ध कराया जाए तो किसान फिर सोयाबीन के रकबे को बढ़ाने की ओर अग्रसर होंगे।

फसल प्रबंधन और सब्सडाइज बीज की उपलब्ता :– हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सोयाबीन खरीदी की घोषणा की है। पंजीयन की शुरुआत हुई है। सरकार का यह निर्णय काफी समय देरी से आया है। इससे किसानों में अब भी भ्रम की स्थिति है, कि क्या सरकार हर साल सोयाबीन खरीदी का बफर जोन बनाएगी। किसानों के बीच सरकार की सोयाबीन नीति को लेकर व्यापक स्तर पर प्रचार और बीज खरीदी में सब्सिडी और स्वस्थ फसल प्रबंधन प्रशिक्षण के लिए योजनाओं का संचालन आवश्यक है। इससे किसानों को सरकार की नीति पर भरोसा कायम होगा और वे सोयाबीन के घटते रकबे को दोबारा बढ़ाकर भविष्य में प्रदेश को देश में सर्वाधिक सोया उत्पादित राज्य की श्रेणी में खड़ा करने में योगदान देंगे।

टेबल–1
सोयाबीन का समर्थन मूल्य (प्रति क्विंटल)

साल	समर्थन मूल्य	बढ़ोतरी (% में)
2010–11	1400	00
2011–12	1690	21
2012–13	2240	32
2013–14	2560	14
2014–15	2560	00
2015–16	2600	1.5
2016–17	2775	07
2017–18	3050	10
2018–19	3399	11
2019–20	3710	09
2020–21	3880	4.5
2021–22	3950	02
2022–23	4300	09
2023–24	4600	07
2024–25	4892	6.3

टेबल–2 लागत का गणित

तीन बार जुताई का खर्च	2400 रु.
बीज का खर्च	2800 से 3200 रु.
बुआई का खच	800 रु.
डीएपी और खाद का खर्च	1500 रु
खरपतवार नाशक के दो छिड़काव	20000 रु.
इल्लीमार की तीन सप्रे का खर्च	3600 रु.
हॉर्वेस्टर से कटाई	1500 रु.
मजदूरों से कटाई	6000 रु.
मंडी तक ले जाने का खर्च	1000 रु.
कुल खर्च	19500 रूपए
मुनाफा	500 रु. प्रति एकड़

टेबल–3 देश के कुल सोयाबीन उत्पादन में एमपी का योगदान 41.92%

राज्य / साल	20122–23	2023–24
महाराष्ट्र	66.16	52.33
मध्यप्रदेश	57.89	54.72
देश	149.85	130.54

(उत्पादन लाख टन में)

टेबल–4 सबसे ज्यादा सोयाबीन का उत्पादन अमेरिका–ब्राजील में

वित्तीय वर्ष	अमेरिका	ब्राजील	अर्जेंटीना	चीन	भारत
2017–2018	3313	3511	2319	1854	808
2018–2019	3400	3334	3331	1898	982
2019–2020	3187	3482	2922	1946	763
2020–2021	3379	3549	2848	1987	823
2021–2022	3417	3564	3023	1979	882

आंकड़े (किग्रा. प्रति हेक्टेयर)

टेबल–5 सोयाबीन का उत्पादन

वित्तीय वर्ष	एमएसपी (रू. प्रति क्विंटल)	उत्पादन (करोड़ रूपए में)
2019–20	3710	18,093
2020–21	3880	16,548
2021–22	3950	21,298
2022–23	4300	24,892
2023–24	4600	25,171

सोयाबीन का उत्पादन (करोड़ में)

संदर्भ सूची

- कृषक जगत, मासिक पत्रिका वर्ष 2023
- किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, मध्यप्रदेश प्रशासकीय प्रतिवेदन (वर्ष 2022–23)
- जीओआई (2001). कृषि विपणन को मजबूत बनाने और विकसित करने पर विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, (जून, 2001)
- पुष्पराज कुमारी तिवारी कृषि विपणन के आर्थिक विश्लेषण (2019)
- भारतीय किसान दशा और दिशा नीलमणि शर्मा, निज सचिव, भारत सरकार में (वर्ष 2018 में संचार सौरभ पत्रिका में प्रकाशित लेख)
- मिनाक्षी मेश्रामः आधुनिक कृषि में नए आयाम
- मोना सोलंकी :– (वर्ष 2013 के इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एनवायरनमेंट एंड बायोटेक्नोलॉजी में प्रकाशित
- रीवा जिले की कृषि विपणन व्यवस्था पर एक अध्ययन पर प्रकाशित डॉ खातून फरीदा का जर्नल (वर्ष 2022)
- http://sopa.org
- http://agtechnews.com
- http://tractorbuyersguide.in
- http:// indiaagronet.com

- http://agricoop.nic.in
- http://agriinsurance.com
- https://farmer.gov.in
- https://dainik bhasakar.com